17

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No. 2022-23

Sr. No. of Question Paper : 785 **B**

Unique Paper Code : 12051201

Name of the Paper : Hindi Sahitya ka Itihas (Aadikal Aur Madhyakal)

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi – CBCS**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा का सामान्य परिचय दीजिए। (15)

अथवा

हिंदी साहित्य के काल विभाजन एवं नामकरण पर प्रकाश डालिए।

2. आदिकाल के राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर विचार कीजिए। (15)

P.T.O.

अथवा

आदिकालीन साहित्य के सिंह और नाथ साहित्य की विशेषताओं का विवेचन कीजिए ।

3. राम भक्ति काव्य की प्रवृत्तियों पर विचार कीजिए । (15)

अथवा

भक्ति आंदोलन के अखिल भारतीय स्वरूप पर प्रकाश डालिए ।

4. रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त का आशय स्पष्ट करते हुए रीतिकाल की सामान्य प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए । (15)

अथवा

रीतिकालीन सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए ।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए - (5 + 5 + 5)

(i) संत काव्य धारा

(ii) रीतिकालीन वीर काव्य

(iii) कृष्ण भक्ति साहित्य

(iv) रासो साहित्य

(v) सूरदास

[This question paper contains 2 printed pages.]

(18) **Your Roll No.** 2023

LIBRARY
E

Sr. No. of Question Paper : 3680

Unique Paper Code : 12051201

Name of the Paper : Hindi Sahitya Ka Itihas (Aadikal Aur Madhyakal)

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi - CBCS**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. साहित्येतिहास-लेखन में कालविभाजन एवं नामकरण की समस्या पर विचार कीजिए। (14)

अथवा

हिन्दी-साहित्येतिहास-लेखन की परम्परा का परिचय दीजिए।

2. आदिकालीन लौकिक साहित्य का परिचय दीजिए। (14)

अथवा

आदिकाल के राजनीतिक-सामाजिक एवं सांस्कृति परिवेश पर प्रकाश डालिए।

3. भक्ति-आन्दोलन के अखिल भारतीय स्वरूप का विश्लेषण करीजिए।

अथवा

भक्तिकाव्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि का परिचय दीजिए। (14)

4. रीतिकाल की प्रवृत्तियों का विश्लेषण कीजिए। (14)

अथवा

रीतिकाल की युगीन पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए।

5. (क) किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए। (6,6)

(i) नाथ-साहित्य

(ii) सन्त-साहित्य

(iii) प्रेममार्गी सूफी-साहित्य

(iv) रीतिबद्ध काव्य

(ख) किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए। (7)

(i) रीतिकालीन नीतिकाव्य

(ii) सिद्ध-काव्य

[This question paper contains 4 printed pages.]

19

Your Roll No. 2023

LIBRARY

Sr. No. of Question Paper : 3835

E

Unique Paper Code : 12051202

Name of the Paper : **हिन्दी कविता (रीतिकालीन काव्य)**
Hindi Kavita (Reetikaleen Kavya)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – CBCS**

Semester : II

Duration : 3 Hours   Maximum Marks : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. केशव रचित 'रामचन्द्रिका' के भाव-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

अथवा

रहीम के दोहों का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

P.T.O.

2. बिहारी के काव्य में अभिव्यक्त शृंगार-भावना का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

बिहारी के काव्य-सौन्दर्य का सोदाहरण विवेचन कीजिए। (12)

3. घनानंद के काव्य में अभिव्यक्त सौंदर्य-चेतना का विवेचन कीजिए।

अथवा

"घनानंद 'प्रेम की पीर' के गायक हैं।" स्पष्ट कीजिए। (12)

4. भूषण की काव्य-भाषा का विवेचन कीजिए।

अथवा

गिरिधर कविराय के काव्य में व्यंजित नैतिक आदर्शों पर प्रकाश डालिए।

(12)

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) राजत रंच न दोष युत कविता बनिता मित्र।
बुंदक हाला परत ज्यौं गंगाघट अपवित्र।

अथवा

पावस देखि रहीम मन, कोइल साथे मौन।
अब दादुर बक्ताभए, हमको पूछत कौन।
रहिमन प्रीति न कीजिए, जस खीरा ने कीन।
ऊपर से तो दिल मिला, भीतर फाँके तीन।। (8)

(ख) मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोई।

जा तन की झाँई परैं, स्यामु हरित-दुति होई।

रनितभृंग-घंटावली, झरित दान मधु-नीरु।

मंद-मंद आवतु चल्यौ, कुंजरु कुञ्ज-समीरु।

अथवा

रावरे रूप की रीति अनूप नयो नयो लागत ज्यौं-ज्यौं निहारियै।

त्यौं इन आँखिन बानि अनोखी अघानि कहूँ नहिं आन तिहारियै।

एक ही जीवन हुतौ सु तौ बारयौ सुजान संकोच और सोच सहारियै।

रोकी रहै न दुई घनआनंद बावरी रीझ् के हाथ निहारियै।

(7)

7. दिये गये निर्देशों के आधार पर किन्हीं दो अवतरणों का रचना-कौशल (लगभग 150 शब्दों में) उद्घाटित कीजिए :

(क) घाम घरीक निवारियै, कलित ललित अलि-पुंज।

जमुना-तीर तमाल-तरु-मिलित मालती-कुंज ।।

उन हरकी हँसी कै, इतैंडन सौंपि मुसकाइ।

नैन मिलैं मन मिलि गए दोऊ, मिलवत गाइ ।।

(भाव-सौंदर्य)

(ख) इंद्र जिम जंभ पर, बाड़व स अंभ पर, रावन सदंभ पर रघुकुलराज है।

पौन बारिबाह पर, संभु रतिनाह पर, ज्यौं सहस्त्रबाहु पर राम द्विजराज है।

दावा द्रुमदंड पर चीता मृग झुंड पर भूषन बितुंड पर जैसे मृगराज है।

तेज तम-अंस पर कान्ह जिम कंस पर, यौं मलेच्छ-बंस पर सेर सिवराज है। (शिल्प-सौंदर्य)

(ग) साईं बैर न कीजिए, गुरु, पंडित, कवि, यार
बेटा, बनिता, पँवरिया, यज्ञ करावन हार
यज्ञ करावन हार, राजमंत्री जो होई
विप्र, परोसी, वैद, आपको तपै रसोई
कह गिरिधर कविराय, युगनते यह चलि आई
इन तेरह सों तरह दिए, बनिआबै साईं ।। (नीति-सौंदर्य)

(घ) पहले अपनाय सुजान सनेह सों क्यों फिरि नेह कै तोरियै जू।
निरधार अधार है धार-मँझार दई गहि बाँह न बोरियै जू।
घनआनंद आपने चातिक कों गुन-बाँधिलैं मोह न छोरियै जू।
रस प्याय कै ज्याय बढ़ाय कै आस बिसास मैं यौं बिष घोरियै जू ।।
(रस-व्यंजना)

(6+6=12)

[This question paper contains 4 printed pages.]

(20) **Your Roll No.** JULY 2023

Sr. No. of Question Paper : 1302 **F**

Unique Paper Code : 2052101201

Name of the Paper : **हिंदी कविता : सगुण भक्तिकाव्य एवं रीतिकालीन काव्य**

Name of the Course : **बी.ए. (विशेष) हिंदी**

Semester / Type : II / DSC

समय : 3 घण्टे **पूर्णांक : 90**

LIBRARY

छात्रों के लिए निर्देश

1. **इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।**

2. **सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।**

1. **निम्न पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये :** **(3×9=27)**

(क) **त्रिजटा नाम राच्छसी एका। राम चरन रति निपुन बिबेका ।।**

सबन्हौ बोलि सुनाएसि सपना। सीतहि सेइ करहु हित अपना ।।

सपनें बानर लंका जारी। जातुधान सेना सब मारी ।।

खर आरूढ़ नगन दससीसा। मुंडित सिर खंडित भुज बीसा ।।

P.T.O.

अथवा

एके कहै अमल कमल मुख सीताजू को,

एकै कहै चंदसम आनँद को कंद री।

होइ जी कमल तौ रयनि में न सकुचै री,

चंद जौ तौ बासर न होइ दुति मंद री।

बासर ही कमल रजनि ही में चंद,

मुख बासर हू रजनि बिराजै जगवंद री।

देखे मुख भावै अनदेखई कमल चंद,

तातें मुख मुखै सखी कमलै न चंद री।

(ख) बिन गोपाल बैरिन भई कुंजैं।

तब ये लता लागति अति सीतल, अब भई ज्वाल की पुंजै ।।

बृथा बहति जमुना, खग बोलत, बृथा कमल फूलैं, अलि गुंजैं।

पवन पानि घनसार संजीवनि दधिसुत किरन भानु भई भुंजै।

ए, ऊधो, कहियो माधव सों बिरह कदन करि मारत लुंजै।

सूरदास प्रभु को मग जोवत आँखियाँ भई बरन ज्यों ज्यों गुंजै

अथवा

मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।

जा तन की झाँई परै स्यामु हरित - दुति होई ।।

लिखन बैठि जाकी सबी गहि गहि गरब गरूर।

भए न केते जगत के चतुर चितेरे कूर ।।

(ग) रावरे रूप की रीति अनूप नयो नयो लागत ज्यौं ज्यौं निहारियै।

त्यों इन आँखिन बानि अनोखी अघानि कहूँ नहिं आन निहारियै।

एक ही जीव हुतौ सु तौ वारयौ सुजान सकोच औ सोच सहारियै।

रोकी रहै न, दहैं घनआनंद बावरी रीझ की हाथनि हारियै ।।

अथवा

इंद्र जिमि जंभ पर, बाडव सुअंभ पर। रावन सदंभ पर रघुकुलराज है।

पौन बरिबाह पर, संभु रतिनाह पर ज्यौं सहस्त्रबाह पर, राम द्विजराज है ।।

दावा द्रुमदंड पर चीता मृगझुंड पर भूषण बितुंड पर, जैसे मृगराज है।

तेजतम अंस पर कान्ह जिम कंस पर त्यों मलेच्छ बंस पर, शेर सिवराज है।

2. तुलसीदास की भक्ति-भावना का वर्णन कीजिए। (15)

अथवा

केशव की काव्य-कला पर प्रकाश डालिए।

3. सूरदास के "भ्रमरगीत सार" का अपने शब्दों में विवेचन कीजिए। (15)

अथवा

मुक्तक काव्य की दृष्टि से बिहारी के काव्य का मूल्यांकन कीजिए।

4. घनानंद की शृंगारिक भावना का विश्लेषण कीजिए। (15)

अथवा

"भूषण का काव्य राष्ट्रीय-सांस्कृतिक एकता को प्रकट करता है" इस कथन का युक्तियुक्त विवेचन कीजिए।

5. टिप्पणी लिखिए (किन्हीं दो पर) (2×9=18)

(i) तुलसीदास के काव्य में लोकमंगल की भावना

(ii) सूरदास की काव्य भाषा

(iii) केशव का आचार्यत्व

(iv) बिहारी की सौंदर्य चेतना

(v) रीतिमुक्त कवि घनानंद

(vi) वीर काव्य परंपरा और भूषण

(2000)

[This question paper contains 2 printed pages.]

(21) **Your Roll No.** JULY 2023

Sr. No. of Question Paper : 1330 **F**

Unique Paper Code : 2052101202

Name of the Paper : Hindi Sahitya Ka Itihas (Aadhunik Kal)

Name of the Course : B.A.(Hons.) Hindi – DSC-5

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi

1. नवजागरण के आलोक में भारतेंदु युगीन साहित्य का विश्लेषण कीजिए । (18)

अथवा

खड़ी बोली आन्दोलन के संदर्भ में महावीर प्रसाद द्विवेदी के योगदान पर प्रकाश डालिए ।

P.T.O.

2. हिंदी आलोचना की विकास यात्रा पर प्रकाश डालिए। (18)

अथवा

हिंदी निबंध की विकास यात्रा को रेखांकित कीजिए।

3. छायावादी कविता की मुख्य प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए। (18)

अथवा

प्रगतिवादी काव्य-रचना के परिवेश का विश्लेषण कीजिए।

4. दलित शब्द की अवधारणा पर प्रकाश डालते हुए दलित चेतना के उदय और विकास को रेखांकित कीजिए। (18)

अथवा

समकालीन कथा-साहित्य पर प्रकाश डालिए।

5. किन्हीं दो पर टिपण्णी लिखिए :- (9 + 9=18)

(क) मध्यकालीन बोध

(ख) स्वाधीनता आन्दोलन और हिंदी साहित्य

(ग) संस्मरण

(घ) साठोत्तरी कविता

(ङ) साहित्यिक पत्रकारिता

[This question paper contains 4 printed pages.]

(22) Your Roll No. JULY 2023

Sr. No. of Question Paper : 1353 **F**

Unique Paper Code : 2052101203

Name of the Paper : Hindi Nibandh Evam Anya Gadya Vidhaein

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester / Type : II / DSC

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×2=20)

(क) प्रेम की भाषा शब्द-रहित है। नेत्रों की, कपोलों की, मस्तक की भाषा भी शब्द-रहित है। जीवन का तत्व भी शब्द से परे है। सच्चा आचरण-प्रभाव, शील, अचल-स्थित संयुक्त आचरण न तो साहित्य के लंबे व्याख्यानों से गठा जा सकता है; न वेद

की श्रुतियों के मीठे उपदेश से; न अजील से; न कुरान से; न धर्मचर्चा से; न केवल सत्संग से; जीवन के अरण्य में धंसे हुए पुरुष के हृदय पर प्रकृति और मनुष्य के जीवन के मौन व्याख्यानों के यत्न से, सुनार के छोटे हथौड़े की मंद-मंद चोटों की तरह आचरण का रूप प्रत्यक्ष होता है।

अथवा

दूसरों के, विशेषतया अपने परिचितों के, थोड़े क्लेश या शोक पर जो वेगरहित दुःख होता है, उसे सहानुभूति कहते हैं। शिष्टाचार में इस शब्द का प्रयोग इतना अधिक होने लगा है कि यह निकम्मा सा हो गया है। अब प्रायः इस शब्द से हृदय का कोई सच्चा भाव नहीं। सहानुभूति के तार, सहानुभूति की चिट्ठियाँ लोग यों ही भेजा करते हैं। यह छद्म शिष्टता मनुष्य के व्यवहार क्षेत्र से सच्चाई के अंश को क्रमशः चरती जा रही है।

(ख) साधु ने समझाया, "महाराज, भ्रष्टाचार और सदाचार मनुष्य की आत्मा में होता है; बाहर से नहीं होता। विधाता जब मनुष्य की आत्मा में होता है; बाहर से नहीं होता। विधाता जब मनुष्य को बनाता है तब किसी की आत्मा में ईमान की अकल फिट कर देता है और किसी की आत्मा में बेईमानी की। इस कल में से ईमान या बेईमानी के स्वर निकलते हैं, इन्हें दबाकर ईमान के स्वर कैसे निकाले जाएं? मैं कई वर्षों से इसी के चिंतन में लगा हूं।"

अथवा

जैसे अपने जड़ तन से निकल कर तदात्म मन कहीं घोर निभृत में विभोर हो रहा हो, चेहरे पर तनाव नहीं, रम्य रेखाओं में सलवटें नहीं, असंभव की संभावनाओं से उदासीन, आत्मानुशासित दृष्टि का सृष्टि चेतन प्रसार। मैं छेड़ता न था कि उस एकात्म चौतन्य चंद्र पर बादल न रुके, कुमुद न कुम्हलाए, तनिक कंकड़ी के पड़े स्वस्थ जल घायल न हो।

2. "जातियों का अनूठापन" निबंध की तात्विक समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

"आचरण की सभ्यता" निबंध का मूल सन्देश लिखिए।

3. "करुणा" निबंध के आधार पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल की निबंध-शैली का विवेचन कीजिए। (15)

अथवा

हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने "भारतवर्ष की सांस्कृतिक समस्या" निबंध में किन-किन समस्याओं की ओर ध्यान आकृष्ट किया है?

4. "निराला की साहित्य साधना-नए संघर्ष" के आधार पर निराला की साहित्यिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

"सदाचार का ताबीज" की भाषा-शैली पर चर्चा कीजिए।

5. संस्मरण की विशेषताओं के आधार पर "अज्ञेय के साथ" संस्मरण की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

"अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा" यात्रा- वृतांत का सार लिखिए।

6. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए : (10)

(क) राहुल सांकृत्यायन का साहित्यिक परिचय दीजिए।

(ख) "करुणा" निबंध का प्रतिपाद्य